[This question paper contains 2 printed pages.]

Sr. No. of Question Paper : 1347 **D** आपका अनुक्रमांक.....

Unique Paper Code : 205403

Name of the Course : **B.A. (Hons.) बी. ए. (ऑनर्स)**

Name of the Paper : HINDI – Paper XII : (हिंदी उपन्यास)
(प्रवेश-वर्ष 2011 और तत्पश्चात्)

Semester : IV

समय : 3 घंटे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. 'कर्मभूमि' उपन्यास जाति और धर्म की संकीर्णता के विरुद्ध मानवीय समाज की पैरवी करता है' - युक्तियुक्त उत्तर दीजिए।

अथवा

राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन के संदर्भ में 'कर्मभूमि' की समीक्षा कीजिए। (12)

2. 'आत्मनिर्भर, एकाकी जीवन व्यतीत करती अविवाहित स्त्री को परिवार और समाज सदा नैतिकता की तुला पर तौलता है' - 'पचपन खंभे लाल दीवारें' उपन्यास की नायिका के संदर्भ में इस कथन पर विचार कीजिए।

अथवा

'झांसी की रानी' उपन्यास स्वराज प्राप्ति के उद्देश्य से लिखा गया है' - उदाहरण सहित चर्चा कीजिए। (12)

3. "विभाजन केवल भौगोलिक ही नहीं, मानवीय संवेदनाओं का भी बँटवारा था" - 'तमस' के आधार पर सिद्ध कीजिए।

अथवा

'तमस' उपन्यास के किसी एक प्रमुख चरित्र का विवेचन कीजिए। (12)

4. निम्नलिखित में से किन्हीं **तीन** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (8×3=24)

(क) वह धर्म के पीछे लाठी लेकर दौड़ने लगा। धन के इस बंधन का उसे बचपन से ही अनुभव होता आया था। धर्म का बंधन उससे अधिक कठोर, कहीं असहाय, कहीं निरर्थक था। धर्म का काम संसार में मेल और एकता पैदा करना होना चाहिए। यहां धर्म ने विभिन्नता और द्वेष पैदा कर दिया है। क्यों खान-पान में, रस्म-रिवाज में धर्म अपनी टांग अड़ाता है ? मैं चोरी करूं, खून करूं, धोखा

दूं, धर्म मुझे अलग नहीं कर सकता । अछूत के हाथ का पानी पी लूं, धर्म छूमंतर हो गया । अच्छा धर्म है ?

(ख) स्वराज स्थापना के आदर्शवादी अपने-अपने छोटे-छोटे राज्य बनाकर बैठ जाते हैं । जनता और उनके बीच का अंतर नहीं मिटता है - घटता ही बहुत कम है । जनता त्रस्त बनी रहती है । जब जनता का पूरा सहयोग राज्य को प्राप्त हो जाए और राजा टीम-टाम तथा विलासिता का दासत्व छोड़कर प्रजा का सेवक बन जाए तब मानो स्वराज्य की नींव भर गई और भवन बनना आरंभ हो गया ।

(ग) नत्थू परेशान था । अपनी कोठरी के बाहर बैठा वह चिलम फूंके जा रहा था । जितना अधिक वह मार-काट की अफवाहों को सुनता, उतना ही अधिक उसका दिल बैठा जाता । बार-बार अपने मन को समझाता, मैं अंर्तजामी तो नहीं हूं, मुझे क्या मालूम किस काम के लिए मुझसे सुअर मरवाया जा रहा है । कुछ देर के लिए उसका मन ठिकाने भी आ जाता, लेकिन फिर जब किसी घटना की बात सुनता तो फिर बेचैन होने लगता ।

(घ) क्या तुम ईश्वर के घर से गुलामी करने का बीड़ा लेकर आए हो ? तुम तन-मन से दूसरों की सेवा करते हो, पर तुम गुलाम हो । तुम्हारा समाज में कोई स्थान नहीं । तुम समाज की बुनियाद हो । तुम्हारे ही ऊपर समाज खड़ा है, पर तुम अछूत हो । तुम मंदिरों में नहीं जा सकते । ऐसी अनीति इस अभागे देश के सिवा और कहां हो सकती है ?

(ङ) अनायास ही नील से जो नाता जुड़ गया था, उसकी जड़ें कितनी शीघ्र, कितनी गहराई तक पहुंच गईं थीं, इसका सुषमा को अनुमान न था । नील उसे प्रिय था, उसने यह बात स्वीकार कर ली थी । वह कहानियों की उन शापग्रस्ता राजकुमारी की भांति थी, जो नील के स्पर्श से जाग चुकी थी । कभी-कभी नील के मुख पर भावों के उतार-चढ़ाव को देखकर उसे अपने पर आश्चर्य होता । क्या किसी और को सुख देने, किसी के मुख पर इतनी कोमलता लाने की क्षमता उसमें है ?

(च) मन के अंदर से फिर एक आवाज आई : कहीं नहीं जाओ, यहीं बने रहो, जब बलवाई आएं तो दुकान भी हाजिर कर देना और जान भी हाजिर कर देना । यहां मर जाना अच्छा है परदेसों की खाक छानने से । कौन आएगा हमला करने ? बार-बार वह सोचता पर यकीन नहीं होता था कि गांव का कोई आदमी उस पर हमला करने आएगा ।

5. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : (15)

(i) मनोविश्लेषणवादी दृष्टि के आधार पर 'जहाज का पंछी' उपन्यास की समीक्षा कीजिए ।

(ii) 'जहाज का पंछी' उपन्यास की शिल्पगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए ।

(iii) 'रागदरबारी' उपन्यास की भाषा पर विचार कीजिए ।

(iv) "'रागदरबारी' राजनीतिक-सामाजिक भ्रष्टाचार पर कटु व्यंग्य है" - समीक्षा कीजिए ।

(v) 'कठगुलाब' उपन्यास की मूल संवेदना पर विचार कीजिए ।

(vi) 'कठगुलाब' उपन्यास की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए ।